स्नातकोत्तर - संस्कृतविभाग :

राँची विश्वविद्यालय:, राँची

(पीएच०डी० इति कार्यक्रमों में प्रवेशहेतु प्रस्तुत शोध निबन्धन)

(मानविकी संकाय:)

आपस्तम्बगृह्यसूत्र एवं गोभिलगृह्यसूत्र में उपदिष्ट संस्कार विधियों का तुलनात्मक अध्ययन

शोध - निर्देशिका | शोधच्छात्रा

डॉ०भारती द्विवेदी | कोयेल दास

सहायक प्राध्यापिका,स्नातकोत्तर - संस्कृतविभाग

राँची विश्वविद्यालय

★ भूमिका:

वेद समस्त ज्ञान के मूल हैं। वेदों ने ना केवल भारतीय सस्कृति को वर्धित किया अपितु संसार की समस्त संस्कृतियों को सर्वदा समृद्ध करते हैं। वेदों में मानवीय जीवन निर्माण का अद्भतु तथ्य मिलतें हैं। इसमें मनुष्य जीवन का उद्देश्य, उसकी व्यवहारिक प्रक्रिया, सामाजिक एवं पारिवारिक जीवन में नैतिकता का एक सुन्दर रूप प्रदान किया गया है।मनुष्यों ने आचार व्यवस्था की शिक्षा सर्वप्रर्थम वेदों से प्राप्त किया है। वेद सर्वोपरि है। इष्टप्राप्ति और अनिष्ट निवारण[1] का उपाय वेद में है। भारतीय सस्कृति के मूल है सस्कार जो वेदांग के अन्तर्भूत है। वेदांग[2] का वर्णन सर्वप्रर्वथम मण्डुकोपनिषद में किया गया है। वेदांग से ना केवल वेदों के स्वरूप का पता चलता है अपितु कल्प वेदांग स्थित गृह्यसूत्र से भारतीय सस्कार का एक सुस्पष्ट धारणा मिलता है। वेदों के भिन्न शाखा में सस्कार के वर्णन भिन्न रूप से प्राप्त होता हैं। इस शोधपत्र के माध्यम से आपस्तम्ब गह्यसूत्र और गोभिल गृह्यसूत्र का परिचय प्रदान करते हुए दोनों गृह्यसूत्र में वर्णित सस्कार का एक तलुनात्मक अध्ययन किया जायेगा।

★ साहित्य के आलोचना:

विविध साहित्य, वैदिक ग्रंथों, स्मृति शास्त्र, शोध पत्रिका ओर शोधग्रथं में सस्कार विषय के पर्यालोचना हुयी है —

क.आपस्तम्ब गृह्यसूत्र

ख.गोभिल गृह्यसूत्र

ग.आपस्तम्ब गृह्यसूत्र : एक अनुशीलन

इस प्रकार के ओर भी ग्रंथों उपलब्ध है। उपलब्ध ग्रंथों ओर शोधग्रथं सामग्रियों को सचारू रूप से अध्ययन करने के बाद उक्त शोधग्रथं में विषय प्रतिस्थापन के लिए एक धारणाएँ मिलना सम्भव है।

★ उद्देश्य:

संसार में कोई भी कार्य उद्देश्यहीन नहीं होता है। फिर शोध जैसे महत्त्वपूर्ण कार्य निश्चित रूप से विशिष्ट उद्देश्यों के लिए किया जाता है। इस शोधपत्र का उद्देश्य है-

क. सूत्रसाहित्य के बारे में सामान्य परिचय दिया जायेगा। वर्तमान काल में सस्कार कितना जरूरी है, इस विषय पर भी आलोचना किया जायेगा।

ख.आपस्तम्ब गृह्यसूत्र ओर गोभिल गृह्यसूत्र के विषय को सुस्पष्ट रूप से प्रतिपादित किया जायेगा।
ग. दोनों गृह्यसूत्र में वर्णित सस्कार के बारे में विस्तृत जानकारी के माध्यम से एक तुलनात्मक अध्ययन दिखाया जायेगा।

★विषय के अध्ययन

वेद विश्व के प्राचीनतम साहित्य ग्रथं है। भारतीय सभ्यता एवं सस्कृति के आत्मा है वेद। ज्ञानार्थक 'विद्'[3] धातु से वेद शब्द निष्पन्न है। वेद के गूढ़ एवं व्यावहारिक अर्थ जानने के लिए जो सहायक तत्त्वों की आवश्यकता होती है वह वेदांग है[4]। कल्प नामक ग्रंथे याग-यज्ञादि , विवाहादि सामाजिक कर्मो का प्रतिपादन किया गया है। फिर कल्प[5] ग्रथं को चार भागों में विभक्त किया गया है— १.श्रौतसत्रू २.गृह्यसूत्र ३.धर्मसूत्र ४.धर्मसूत्र । गृहस्थ सर्स्कार गृह्यसूत्र का मूल विषय है। शास्त्रविहित कर्मो को सस्कार[6] कहते हैं। पृथ्वी में मनुष्य सर्वश्रेष्ठ जीव हैं। जन्म के बाद विविध सस्कार द्वारा इसके मन, बुद्धि और शरीर की विकास होता है। जिस की वर्णन गृह्यसूत्र में वर्णित है।

चारों वेद से सम्बद्ध गृह्यसूत्र है -
ऋग्वेद - आश्वलायन, शांखायन
सामवेद - गोभिल, खादिर
यजुर्वेद -आपस्तम्ब, हिरण्यकेशि, वौधायन, मानव, पारस्कर ,
अथर्ववेद - कौशिक गृह्यसूत्र ।

आपस्तम्ब के 30 में 27 वें प्रश्न ही गृह्यसूत्र है। यह गृह्यसूत्र आठ पटलों में विभक्त है। आठ पटल के भीतर 'खण्ड' है जो सख्या में 23 हैं। खण्डों के अन्तर्गत सूत्र हैं।गृहस्थ सस्कार के साथ लोकिक कर्मो का वर्णन हमे प्राप्त होता है। जैसे - सामान्य गृह्यकर्मविधियाँ, गहस्थाश्रम से सम्बद्ध सस्कार, विविध प्रकार बलियां, अभिचारिक एवं लौकिक कर्म। सामवेद के तीनों गृह्यसूत्रों में गोभिल गृह्यसूत्र अति प्रख्यात एवं प्रचलित कौथमु शाखा से सम्बद्ध होने के कारण लोकोप्रिय है। कुल मिलाकर 39 खण्ड है। इसके मुख्य प्रतिपाद्य विषय है – गर्भाधान से उपनयन तक के कर्मो , उपाकर्म, गोपालनविधि , स्थालीपाकादि । इनके अतिरिक्त पिण्डपितृयज्ञ का वर्णन है जो इस की विशषेता है। गृह्यसूत्र के विषयवस्तु विविधता वाली है कि गृह्यसूत्र से सम्बद्ध समस्त क्रिया का वर्णन करना सम्भव नहीं है।

आपस्तम्ब ओर गोभिल दोनों गृह्यसूत्रों में कुछ कर्मानुष्ठान का विधान किया गया है। जैसे नित्यहोम, अष्टका, श्रवणाकर्मादि साम्य विषय को वर्णित किया जायेगा। दोनों गृह्यसूत्रों में विशषे कर्मानुष्ठान का भी विषय स्वल्प विस्तार में प्रतिपादित किया जायेगा। सम् उपसर्ग पर्वूक 'कृ' धातु से 'घञ् ' प्रत्यय करने पर 'सस्कार' शब्द बनता है। हिन्दूधर्म अथवा किसी भी धर्म का महत्वपर्णू अगं है सस्कार। सस्कार वैदिक काल से शुरू होकर आज तक धार्मिक, सामाजिक रीति को एकता प्रदान करता है। गृह्यसूत्र में सस्कार का विशषे रूप से वर्णन है। गर्भावस्था से लेकर अन्त्येष्टि क्रम से सस्कार की कार्य सम्पन्न होता है। सस्कार की क्रम है— १. प्राग्नन्मसस्कार २. बाल्यावस्था के सस्कार ३. शैक्षिक संस्कार ४. विवाह सस्कार ५. अन्त्येष्टि सस्कार गोभिल ओर आपस्तम्ब गृह्यसूत्र में सस्कार को लेकर जो काल, कर्मानुष्ठान, विधियाँ बाताया गया है। दोनों गृह्यसूत्रों में सस्कार की क्या साद्दश्य ओर वैसाद्दश्य है, इस विषय में एक तलुनात्मक अध्ययन किया जायेगा।

भारत एक सस्कार प्रधान देश है। शुद्धता, धार्मिकता, पवित्रता सस्कार की प्रधान विशषेता माना जाता है। सस्कार कर्मकांड का मूल आधार है। जिसके द्वारा मनुष्य अपने जीवन को उन्नत, परिष्कृत ओर सुस्कृत बनाता है। आधुनिक काल में सस्कार का व्यवहार ह्रास होता हुआ दिखाई देता है। इसलिए वर्तमान समय में सस्कार की क्या महत्व है इस विषय को भी चर्चा किया जायेगा।

★कार्यपर्यद्धति:

ऐतिहासिक, विश्लेषणात्मक एवं तलुनात्मक अध्ययन से, भारतीय सस्कृति के मलू ग्रन्थ वेद, स्मतिृतिग्रन्थ एवं भारतीय इतिहास, साहित्य, सस्कृति विषयक पुस्तकों से अनुसंधान कार्य सम्पन्न किया जायेगा।

★ सम्भावित अध्याय विभाजन:

★ भूमिका:

*वैदिक वाङ्मय का संक्षिप्त परिचय

*वेदांग का परिचय

*कल्पसूत्रों का विशिष्ट परिचय

अ. श्रौतसूत्र आए. गृह्यसूत्र इ. धर्मसूत्र ई. शुल्बसूत्र

प्रथम अध्याय : गृह्यसूत्रों का विस्तृत परिचय एवं विषय निरुपण

१. गृह्यसूत्र की उत्पत्ति एवं विकास

२. ऋग्वेदीय गृह्यसूत्र

३. यजुर्वेदीय गृह्यसूत्र

४. सामवेदीय गृह्यसूत्र

५. अथर्वेदीय गृह्यसूत्र

द्वितीय अध्याय : आपस्तम्ब गृह्यसूत्र का स्वरूप

१. काल

२. कर्तृत्व

३. प्रतिपादित विषय

तृतीय अध्याय : गोभिल गृह्यसूत्र का स्वरूप

१. काल

२.कर्तृत्व

३. प्रतिपादित विषय

चतर्थु र्थअध्याय : दोनों गृह्यसूत्रों में प्रतिपादित विषयों का साम्य ओर वैषम्य विचार

१.सादृश्य विषय - नित्यहोम, अग्न्याधान,उपाकर्म,अष्टका, श्रवणा कर्म आदि

२.वैसादृश्य विषय - विभिन्न प्रकार बलियां,पिण्डपितृयज्ञ, दर्शपौर्णमास आदि

पचंम अध्याय : दोनों गृह्यसूत्रों में उपदिष्ट संस्कारों का तुलनात्मक अध्ययन

१.प्राग्जन्म संस्कार

२.वाल्यकालीन संस्कार

३.शैक्षिक संस्कार

४.विवाह संस्कार

५.अन्त्येष्टि संस्कार

षष्ठ अध्याय : गृह्यसूत्रों में उपदिष्ट संस्कारों की आधुनिक परिपेक्ष्य में महत्त्व

१.सांस्कृतिक महत्त्व

२.सामाजिक महत्त्व

३.आध्यात्मिक महत्त्व

४.व्यक्तित्व निर्माण एवं विकास

नोट: प्रस्तुत शोध प्रबंध में अध्ययनोपरान्त अध्याय विभाजन में परिवर्तन सम्भावित है।

उपसंहार

संस्कार की परिधि बहुत विस्तृत है। सृष्टि के वाद सेआधुनिक युग तक इसकी महत्ता है। प्राचीनकाल में संस्कार के माध्यम से नीति शिक्षा दी जाती थी जो आज के समय मे भी प्रासंगिक है। संस्कार जीवन के हर क्षेत्र में पवित्रता प्रदान करता है। गृह्यसूत्रकालीन समाज में संस्कार पालन के माध्यम से मानव समाज को नियंत्रित करके, एक सुन्दर रूप प्रदान किया गया था – वही अनुसंधान के माध्यम से उपस्थापित किया जायेगा।

★ तथ्यसूत्र :

1.“इष्टप्राप्त्यनिष्टपरिहारायोरलौकिकमुपायं यो ग्रन्थो वेदयति स वेद:”(सायणाचार्य,तैत्तिरीय संहिता भाष्यभूमिका)

2.“सत्तायां विद्यतेज्ञाने, वेत्ति विन्देवि चारणे। विन्दति विन्दतेप्राप्तौ, श्यन्लुक्श्नम्शष्विदंक्रमांक।। ”(ऋक्प्रातिशाख्य)

3.“छन्दः पादौ तु वेदस्य हस्तौ कल्पोऽथ पठ्यते।ज्योतिषामयनं चक्षुनिरुक्तं श्रोत्रमुच्यते।।शिक्षा घ्राणं तु वेदस्य मुखं व्याकरणंस्मृतम्....”(पाणिनीय शिक्षा, ४१,५२)

4.“कल्पो वेदविहितानां कर्माणामानपुर्व्यूर्व्येण कल्पनाशास्त्रम्।"(ऋग्वैदिक साहित्य एवं संस्कृति :,सम्पा.कपिलदेव द्विवेदी,पृ २१४)

5.“आत्मशरीरान्यतरनिष्टो विहित क्रियाजन्योऽतिशयविशषे : संस्कार”(हिन्दूसंस्कार, पृ.१६)

6.“अन्ध्रादि दाक्षिणाग्नेयोगोदासागर आवधि । यजुर्वेदस्तुतत्तैत्तिर्या आपस्तम्बी प्रतिष्ठिता"।(आपस्तम्ब धर्मसूत्रम्,सम्पा.उमेशचन्द्र पाण्डये, भूमिका अशं :)

★ ग्रन्थपञ्जी:

१.APASTAMBA.APASTAMBA-GRIHYA-SUTRA.Ed,A.MAHADEVA SASTRI.MYSORE,1898

२. गोभिल। गोभिल गृह्यसूत्र। मालवीय डाँ सुधाकर। वाराणसी: चौखम्बा संस्कृत संस्थान, १९९७

३.पाण्डये राजवली। हिन्दूसंस्कार। वाराणसी: चौखम्बा विद्याभवन,१९५७

४.द्विवेदी कपिलदेव। वैदिक साहित्य एवं संस्कृति । वाराणसी: विश्वविद्यालय प्रकाशन,२०००

५.Maxmuller.The Sacred Books Of East(Vol-XXX,Part-ll)